

पाठ—37 अश्वत्थामा

अश्वत्थामा दुर्योधन का हाल जानकर क्षुब्ध हो गया और यह सोचने लगा कि किस प्रकार पांडव और धृष्टद्युम्न से बदला लिया जाए।

अश्वत्थामा ने सोते हुए पांचालकुमार, पांचालवीरों और द्रौपदी के पुत्रों की हत्या कर दी।

निर्दयता से मारने के बाद अश्वत्थामा दुर्योधन के पास पहुँचा और बोला कि मैंने जो किया है उससे आपका कलेजा जरूर टंडा हो जाएगा ।

मैंने पांचालकुमारों और पांडवों के सारे पुत्र मारकर बदला पूरा कर लिया है ।

पांडव वंश का नामोनिशां तो मिट गया लेकिन उत्तरा के गर्भ की रक्षा हुई और अभिमन्यु और उत्तरा के पुत्र परीक्षित का जन्म हुआ ।

युद्ध समाप्त होने का समाचार पाकर धृतराष्ट्र ने कुरुक्षेत्र की समर भूमि गए और अपने ही वंश का विनाश देखकर विलाप करने लगे ।